# 11

# ''इस रीति से प्रार्थना किया करो''

## ( मत्ती 6:9-15; लूका 11:1-4 )

मत्ती 6 में यीशु ने ''मनुष्यों को दिखाने के लिए'' धर्म के काम करने के विरुद्ध चेतावनी दी (आयत 1)। और यीशु ने: कंगालों को दान करने (आयतें 2-4), प्रार्थना करने (आयतें 5-15), और उपवास करने (आयतें 16-18) के तीन उदाहरण दिए। प्रार्थना पर भाग में हमें कथित ''प्रभु की प्रार्थना'' मिलती है (आयतें 9-15)। इस वचन से इतना कुछ सीखने वाला है कि हम यह पूरा पाठ ही इसका दे रहे हैं। इसके शब्द से हम में से कई लोग परिचित हैं:

अत:[1] तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो;
हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है,
तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए।
तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है,
वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू हमारे अपराधों को भी क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा। [क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन] (आयतें 5-13)।

बाद के एक अवसर पर, ''वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना कर चुका तो उसके चलों में से एक ने उससे पूछा, हे प्रभु, जैसा यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखलाया वैसे ही हमें भी तू सिखा दे'' (लूका 11:1)। यीशु ने प्रार्थना के लघु संस्करण के साथ उत्तर दिया:

... जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो:
हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए
तेरा राज्य आए।
हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर।
और हमारे पापों को क्षमा कर
क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं,
और हमें परीक्षा में न ला (लूका 11:2-4)।

हमारा अध्ययन मत्ती 6 अध्याय में दी गई प्रार्थना के रूप पर केन्द्रित रहेगा। परन्तु बीच-बीच में मैं लूका 11 में से भी लूंगा। प्रार्थना की समीक्षा करने से पहले मैं कुछ बातों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं। पहली तो यह कि मत्ती 6 अध्याय में प्रार्थना कर्मकांडी प्रार्थना होने की मंशा से नहीं दी गई थी। मत्ती 6:9-15 से पहली कुछ आयतों में यीशु ने ''बक-बक'' (आयत 7)। करने के विरुद्ध चेतावनी दी थी। इसके अलावा प्रभु ने कहा, ''सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो'' (आयत 9क) या ''इस प्रकार से'' (KJV), *न कि* ''इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करो।'' LB के अनुवाद में ''इन पंक्तियों के साथ प्रार्थना करो।'' बाद में प्रार्थना दोहराने के समय (लूका 11) यीशु ने स्वयं उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया। मत्ती 6 अध्याय में उसने केवल अड़सठ शब्दों का[2] और लूका 11 अध्याय में सैंत्तीस शब्दों का इस्तेमाल किया।[3]

दूसरा, मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि ''उनकी प्रार्थना'' का प्रसिद्ध शीर्षक सबसे बड़िया नाम नहीं है। इसे अन्धकार के युग में किसी अज्ञात विद्वान ने यह नाम दिया था, और यह शब्द इसके साथ जुड़ गया। परन्तु यदि यीशु ने स्वयं कभी यह प्रार्थना की, तो इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है।[4] बेहतर अभिव्यक्ति ''चेलों की प्रार्थना'' होगी। मेरा पसन्दीदा नाम ''नमूने की प्रार्थना'' है।

यह प्रार्थना कई पहलुओं से आदर्श या नमूना है। इसका *दायरा* आदर्श है। इसमें परमेश्वर की महानता को माना गया है। यह राज्य के साथ-साथ संसार के सब लोगों के लिए चिन्ता व्यक्त की गई है। यह व्यक्तिगत आवश्यकताओं की भी बात करती है। इसके अलावा यह प्रार्थना *संक्षिप्तता और सादगी* में आदर्श है। मत्ती में यह पांच आयतों में है जबकि लूका में तीन आयतों में। सबसे लम्बे संस्करण को ऊंचा ऊंचा पढ़ने के लिए केवल बीस सैकंड लगते हैं और तरह से भी यह आदर्श है।

## दिशा देने में आदर्श (6:9)

उदाहरण के लिए यह प्रार्थना दीशा देने में आदर्श या नमूना है। पहली बात तो यह कि यह *परमेश्वर* की ओर है: ''*हे हमारे पिता,* तू जो स्वर्ग में है'' (आयत 9ख)। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी है यानी मरियम, या किसी सन्त से नहीं, बल्कि परमेश्वर से। पौलुस ने कहा कि हम ''सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से *परमेश्वर* पिता का धन्यवाद करते'' रहें (इफिसियों 5:20)। फिर हमें यहां, हमें परमेश्वर अर्थात अपने *पिता* से प्रार्थना करनी है। वह कोई अवैयक्तिक परमेश्वर नहीं, बल्कि एक पिता है जो सम्भाल करता और उपाय करता है। इसके अलावा हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी है, जो *हमारा* पिता है। यह किसी वैरागी की प्रार्थना नहीं और न ही यह इकलौते बच्चे की प्रार्थना है। ''हमारे पिता'' वाक्यांश हमारे सामान्य भाईचारे को मानता है। जब हम ''अपने पिता'' से प्रार्थना करते हैं तो हम यह संकेत देते हैं कि हम पारिवारिक मामलों पर चर्चा करने के लिए इकट्ठा हुए हैं।

यह प्रार्थना दिशा में भी आदर्श है। यह *स्वर्ग की ओर* है: ''हे हमारे पिता, *तू जो स्वर्ग में है।*'' यह संसार परमेश्वर की सृष्टि और सम्पत्ति है, पर यह उसका घर नहीं है। हमारा धर्म स्वर्ग पर केन्द्रित धर्म है। यीशु स्वर्ग से आया और स्वर्ग में वापस चला गया। अब हमारे लिए विनती करते हुए, स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ है। एक दिन वह स्वर्ग में से अपने लोगों को इकट्ठा करने के लिए आएगा। फिर ये लोग अनन्तकाल तक उसके साथ स्वर्ग में रहेंगे। पौलुस ने लिखा

कि ''हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है'' (फिलिप्पियों 3:20)। यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं'' (लूका 10:20) और उन्हें ''स्वर्ग में धन इकट्ठा ...'' करने की चुनौती दी (मत्ती 6:20)।

## श्रद्धा में आदर्श (6:9)

यह प्रार्थना श्रद्धा में भी आदर्श है। परमेश्वर कोई अविश्वसनीय मित्र नहीं, बल्कि वह हमारा *पिता* है और उसका नाम *पवित्र* है। यह प्रार्थना आगे बढ़ती है: ''तेरा नाम पवित्र माना जाए'' (आयत 9ग; देखें लूका 11:2ख)। अनुवादित शब्द ''पवित्र माना जाए'' (*hagiazo*) यूनानी शब्द ''पवित्र'' (*hagios*) से लिया गया है और इसका अर्थ है ''पवित्र के रूप में मानना या श्रद्धा'' रखना।[5] पुराने नियम में भजन संहिता लिखने वाले ने लिखा, ''उसका नाम पवित्र और भययोग्य है'' (भजन संहिता 111:9)। इसी प्रकार मूसा ने आज्ञा दी, ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना'' (निर्गमन 20:7क)।

परमेश्वर का नाम ही बता देता है कि वह क्या है। डी. मार्टिन लॉयड जोन्स ने लिखा है कि ''एक ऐसा बोध है जिसमें हमें जब भी [परमेश्वर के] नाम का इस्तेमाल करते हैं अपने जूतों को उतार देना चाहिए।''[6] नमूने की प्रार्थना यह स्पष्ट कर देती है कि नई वाचा में, अभी भी हमें भय की गहरी समझ के साथ प्रभु के साथ आना आवश्यक है।

## ज़ोर देने में नमूना (6:10)

अभी अभी बताई गई श्रद्धा प्रार्थना में याचनाओं पर आने पर लय बना देती है। इसमें जताई गई आरम्भिक चिन्ता अपने लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के लिए है: ''तेरा राज्य आए'' (आयत 10क; देखें लूका 11:2ग)। अनुवादित शब्द ''राज्य'' (*basileia*) ''सम्प्रभुता, राजसी शक्ति, सत्ता का प्रतीक है।'' अलंकार के रूप में इसका अर्थ ''वह इलाका या लोग जिनके ऊपर राजा शासन करता है।''[7] परमेश्वर का राज्य *परमेश्वर के शासन* को कहा गया है। ''तेरा राज्य आए'' शब्दों का अर्थ हो सकता है ''अधिक से अधिक लोग अपने मनों और जीवनों का राजा परमेश्वर को बनाएं।'' इस अर्थ में इसका अर्थ वही है, जो प्रार्थना में अगली याचना में है: ''तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो'' (आयत 10ख)।

परन्तु पहाड़ी उपदेश के संदर्भ को न भूलें। वह उपदेश देने से तुरन्त पहले यीशु गलील में यह प्रचार करते हुए घूम रहा था कि ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (4:17)। ''राज्य'' मसीहा का राज्य ही था जिसकी राह यहूदी लोग देख रहे थे। वह राज्य मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने के बाद आने वाले पहले यहूदी पिन्तेकुस्त पर स्थापित होना था। पत्रियों में आमतौर पर इसे ''कलीसिया'' कहा गया है। मसीहा के राज्य की कुछ मुख्य आयतों पर ध्यान दें:

- दानिय्येल ने भविष्यवाणी की कि मसीहा का राज्य रोमी साम्राज्य के दिनों में आएगा (देखें दानिय्येल 2:44)।[8]
- रोमियों के संसार में शासन करते हुए, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और फिर यीशु आकर प्रचार करने लगे कि ''स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 3:2; 4:17)।

- कैसरिया फिलिप्पी में यीशु ने अपना राज्य स्थापित करने की बात की, और उसने इसे अपनी कलीसिया कहा (मत्ती 16:18, 19)।
- मसीह ने अपने चेलों को बताया कि राज्य उनके जीवन काल में आएगा और यह ''सामर्थ सहित आएगा'' (मरकुस 9:1)। बाद में उसने कहा कि वह सामर्थ पवित्र आत्मा के आने पर आएगी (प्रेरितों 1:6-8)।
- यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद पहले पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा आया (प्रेरितों 2:1-4)। सामर्थ आई और राज्य/कलीसिया बन गई।

पिन्तेकुस्त के दिन से ही राज्य/कलीसिया के अस्तित्व में होने की बात कही जाती थी। जब लोग उद्धार पा लेते तो परमेश्वर उन्हें ''अन्धकार की शक्तियों'' से निकालकर ''अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश'' (कुलुस्सियों 1:13) कराकर, उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लेता था (देखें प्रेरितों 2:47; KJV)। मसीही लोग एक न हिलाया जा सकने वाला राज्य (इब्रानियों 12:28) यानी वह कलीसिया है जिस पर अधोलोक के फाटकों का कोई वश नहीं हो सकता (मत्ती 16:18)!

जब यीशु ने अपने चेलों से ''तेरा राज्य आए'' प्रार्थना करने को कहा तो वह अपने चेलों से परमेश्वर की महान सनातन योजना में भागीदार होने के लिए कह रहा था, जिसमें कलीसिया शामिल थी (देखें इफिसियों 3:10, 11)।

क्या आज हमें प्रार्थना के इस भाग की प्रार्थना करनी चाहिए? जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है, ''हमें यह याचना 'तेरा राज्य आए छोड़नी होगी;' क्योंकि याचना के अर्थ में राज्य तो आ चुका है, और उन्हीं शब्दों को बनाए रखना और उन्हें उस अर्थ से जिसमें यीशु ने उन्हें इस्तेमाल किया अलग करना अनुपयुक्त होगा।''[9] परन्तु एक तरह से इन शब्दों को लागू करना सम्भव है। हम कह सकते हैं, ''तेरा राज्य *सारे जगत में* आए,'' या ''तेरा राज्य *सब लोगों के मनों में* आए।'' आज इस याचना को व्यक्तिगत बनाकर प्रार्थना कर सकते हैं, ''तेरा शासन *मेरे* मन में पूरी तरह से स्थापित हो।'' इस बात पर ध्यान से विचार करें, क्योंकि यदि हम बिना योग्यता के इन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं तो हम हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों का इस्तेमाल कर रहे हैं जिनका मानना है कि राज्य अभी स्थापित नहीं हुआ।

सबसे बढ़कर नमूने की प्रार्थना सिखाती है कि आपको और मुझे कलीसिया/राज्य की चिन्ता होनी चाहिए और यह कि हमें अपनी प्रार्थनाओं में इसकी बेहतरी के लिए शामिल करना चाहिए। हमें अपने समाज में और संसारभर में कलीसिया के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। ऐसा करके हम ''कलीसिया के द्वारा'' ''उस सनातन मंशा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी'' परमेश्वर की बुद्धि को बताने की उसकी महान योजना में भागीदार बन सकते हैं (इफिसियों 3:10, 11)!

## चिन्ता करने में नमूना (6:10)

अगली याचना में आत्मिक बातों पर ज़ोर देना जारी रहता है: ''तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो'' (आयत 10ख)। व्यक्त की गई इच्छा पृथ्वी पर हर किसी के

लिए परमेश्वर की इच्छा को मानना है। ऐसी सम्भावना पर विचार करना भी मन को भौंचक्का कर देता है। विचार करें कि स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा कैसे पूरी होती है। स्वर्गदूतों और महादूतों के परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होने की कल्पना करें। उन्हें उसके आदेशों को सुनने को तत्पर और उन्हें मानने के लिए तैयार देखें। इस प्रकार से यदि पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को माना जाए तो क्या यह सचमुच में अद्‌भुत नहीं होगा? परमेश्वर की इच्छा मूल रूप में उसके वचन में प्रकाशित की गई है। इसलिए प्रार्थना के इस भाग का उत्तर देने के लिए हमें ''उस वचन को सारी पृथ्वी पर ले जाना आवश्यक है'' (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। फिर हमें हर जगह लोगों को प्रभु की आज्ञा का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

परन्तु प्रार्थना के इस भाग की सबसे बड़ी बात हमें परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपने स्वयं के व्यवहार को जांचने को विवश करना है। कुछ लोग अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा से प्रसन्न नहीं हैं। कहते हैं कि जीवन के बड़े ड्रामे के सम्बन्ध में, ''लोगों को स्वर्ग के राजा द्वारा उन्हें दी गई भूमिकाएं पसन्द नहीं हैं।'' एक अर्थ में कुछ लोग यह प्रार्थना करते हैं, ''पृथ्वी पर *मेरी* इच्छा पूरी हो।'' विलियम बार्कले ने लिखा है, ''प्रार्थना कभी भी अपनी इच्छाओं तक परमेश्वर की इच्छा को झुकाने का प्रयास नहीं होना चाहिए; प्रार्थना अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के आगे झुकाने का एक प्रयास है।''[10]

## संयम में नमूना (6:11)

हम प्रार्थना का आधा भाग पार कर आए हैं और इसमें अभी तक कोई व्यक्तिगत विनती नहीं है। इससे हमें यह पता चलना चाहिए कि हमारी प्रार्थनाओं में किस बात पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। परन्तु अब हमारे मन व्यक्तिगत याचनाओं के लिए तैयार होने चहिए। आगे हम पढ़ते हैं, ''हमारी दिन भर[11] की रोटी आज हमें दे'' (आयत 11)। लूका के विवरण में है ''हमारी दिन भर की रोटी *हर* दिन हमें दिया कर'' (लूका 11:3)। इस प्रार्थना में *संयम* पर ध्यान दें कि यह केक या कोई और इच्छा किए गए डेज़ट के लिए विनती नहीं,[12] बल्कि रोटी के लिए विनती है। यह विनती महीने भर की रोटी के लिए नहीं, बल्कि उसी दिन के लिए काफ़ी है। ''प्रार्थना हमारी आवश्यकताओं के लिए है, न कि हमारी इच्छाओं के लिए।''[13]

प्रार्थना के इस भाग का एक सबक यह है कि हमें जीवन की आवश्यक बातों से प्रसन्न रहना चाहिए। भोजन उन कुछ एक बातों में से एक है जो हमें मिलनी आवश्यक हैं। और चीज़ों के लिए मांगना गलत नहीं है पर हमारी खुशी चीज़ों को इकट्ठा करने पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। पौलुस ने लिखा, ''और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 6:8)।

प्रार्थना के इस भाग में हमें और सबक मिलते हैं। उदाहरण के लिए, हमें याद दिलाया जाता है कि हमें सब आशिषें परमेश्वर की ओर से मिलती हैं इस कारण हमें किसी चीज़ के लिए उससे अपने प्रतिदिन की रोटी जैसी सादी और ज़रूरी चीज़ें मांगनी चाहिए। हमें यह नहीं कहना चाहिए कि ''देखो मैंने क्या किया है,'' बल्कि यह कहना चाहिए कि ''देखो परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है।'' हमारे पास जो भी है, वह हमने चलते-चलते रास्ते से उठाया है, पर जिसने इसे वहां रखा था, वह परमेश्वर ही था। हमें अपने अपने प्रतिदिन की रोटी के लिए काम करना

आवश्यक है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:11) परन्तु हमें इस बात को भी समझना आवश्यक है कि उस आशीष का देने वाला कौन है:

रोटी के पीछे सफेद आटा है
और आटे के पीछे चक्की;
और चक्की के पीछे गेहूं
और उसके पीछे बारिश
और सूरज और फिर पिता की इच्छा।[14]

आयत 12 नि:स्वार्थ होने की और आवश्यकता का संकेत देती है। हमें ''*मेरी* प्रतिदिन की रोटी'' के लिए नहीं, बल्कि ''*हमारी* दिन भर की रोटी'' के लिए प्रार्थना करनी है। पूरी प्रार्थना में मसीही समुदाय के लोगों के लिए ज़ोर है। इस प्रार्थना को फिर से पढ़ें। इसमें व्यक्तिगत सर्वनाम ''मैं'' नहीं मिलता। प्रार्थना दूसरों के लिए चिन्ता से भरी पड़ी है।

## दीनता में नमूना (6:12)

प्रार्थना में आगे एक व्यक्तिगत विनती है: ''तू हमारे अपराधों को भी क्षमा कर'' (आयत 12ख)। अनुवादित शब्द ''अपराधों'' का यूनानी शब्द (*opheilema*) उसका संकेत देता है जो कर्ज़ हो; परन्तु यहां बात व्यक्तिगत कर्ज़ की नहीं, बल्कि आत्मिक कर्ज़ की है यानी ऐसा कर्ज़ जिसे हम कभी चुका नहीं सकते। नये नियम में ''अपराध, दोष, पाप'' को बताने के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल एक वचन में किया गया है।[15] लूका के विवरण में ''और हमारे पापों को क्षमा कर'' (लूका 11:4क) है।[16] पवित्र परमेश्वर के सामने खड़े होकर हम मानते हैं कि हम पापी हैं और परमेश्वर से हमें क्षमा करने को कहते हैं। यह हमारे घमण्ड पर वार करता है।

इस विनती का दूसरा भाग हमारे घमण्ड पर और भी तीखा प्रहार करता है: ''जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है'' (आयत 12क)।[17] क्षमा करना बड़ा कठिन हो सकता है! सी. एस. लूईस ने कहा है, ''हर कोई तब तक ही कहता है कि क्षमा करना एक अद्‌भुत विचार है जब तक उन्हें क्षमा नहीं करना पड़ता।''[18] अपराध जितना बड़ा होगा उतना ही क्षमा करना कठिन होता है। जब कोई हमें आहत करता है तो हमारा घमण्ड और हमारी शेखी घायल हो जाते हैं। हम यह सोचने लग सकते हैं कि ''मैं उसे कभी क्षमा *नहीं* कर सकता!'' यानी एक अर्थ में यह कहना कितना कठिन है कि ''यह इतना आवश्यक नहीं है। इसे जाने देता हूं!''

मुझ से कई बार पूछा जाता है, ''क्या मैं किसी को क्षमा कर सकता हूं यदि वह मन न फिराए और क्षमा न मांगे?'' कुछ लोग लूका 17:3 के साथ इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाते हैं कि जब तक हम मन नहीं फिराते तब तक परमेश्वर हमें क्षमा नहीं करता। परन्तु मैं अपने मनों में *व्यवहार* की बात कर रहा हूं न कि संगति के बहाल होने की। क्रूस पर चढ़े होने के बावजूद यीशु ने प्रार्थना की थी, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। उसके यह प्रार्थना करने के बावजूद उनके मनों में, जब तक उन्होंने मन नहीं फिराया उनके पाप का दोष बना रहा (देखें प्रेरितों 2:36-38)। कहने का मतलब यह है कि यीशु ने उनके लिए *अपने* मन में कोई द्वेष नहीं रखा था। यदि कोई मुझे हानि पहुंचाता है तो उसके साथ

मेरा सम्बन्ध शायद तब तक तनावपूर्ण रहेगा, जब तक वह अपनी गलती नहीं मानता। पर मेरी सबसे बड़ी चिन्ता यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि *मेरे* मन में उसके लिए कोई दुर्भाव नहीं है। मुझे इस बात का ध्यान रखना होगा कि ''कोई कड़वी जड़'' न फूट सके (इब्रानियों 12:15), जो मेरे मन को भरकर उस प्रेम को निकाल दे, जो मुझे दूसरों के लिए होना चाहिए। प्रार्थना के इस भाग के लूका के विवरण में यह सकारात्मक टिप्पणी है: ''क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं'' (लूका 11:4ख)।

यदि हम क्षमा करने को तैयार न हों तो ? पहले तो यह हमारी खुशी छीन सकता है। कौंसलर लैरी कैल्विन ने लिखा है, ''कड़वाहट हमारी आत्मा को कुतर लेती, हमारी सामर्थ को सोख लेती, हमारी भूख को छीन लेती, हमारी नींद को खराब कर देती और हमारी सेहत बर्बाद कर देती है। दुर्भाव रखना हमारे चेहरे पर झुर्रियां ले आता, हमारे कंधों को झुका देता, हमारे पेट में नासूर जला देता और हमारे होंठों पर अप्रसन्नता ले आता है।''[19]

दूसरा, और इससे भी महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि क्षमा न करने को तैयार होना हमारी अनन्त प्रसन्नता को खतरे में डाल सकता है। नमूने की प्रार्थना के लिए तुरन्त बाद कहे गए विचारोत्पादक यीशु के शब्दों पर ध्यान दें: ''इसलिए यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा'' (मत्ती 6:14, 15)। कहते हैं कि क्षमा न करने का इच्छुक व्यक्ति उसी पुल को नष्ट कर रहा होता है जिस पर से उसे गुज़रना है।

## समझ में नमूना (6:13क)

प्रार्थना में आगे है, ''और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा'' (आयत 13क; देखें लूका 11:4ग)। अनुवादित शब्द ''परीक्षा'' के यूनानी शब्द (*peirasmos*) के कई अर्थ हो सकते हैं, पर इस आयत में इसका इस्तेमाल ''बुराई'' के साथ अदल-बदल कर किया गया है। इस संदर्भ में इसका अर्थ ''बुराई करने की परीक्षा'' है। अपने चेलों को सिखाने के लिए यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई प्रार्थना समझ में नमूना है क्योंकि इसमें न केवल पापों की क्षमा की, बल्कि उन बातों से दूर रहने की चिन्ता भी है, जिनसे पाप होता है।

यूनानी धर्मशास्त्र में ''बुराई'' से पहले एक निश्चित उपपद है, जिसे मूल में ''द इविल'' कहा गया है। इसका अर्थ ''बुरी [बात]'' (कुछ भी बुरा) या ''वह [दुष्ट]'' (शैतान) है।[20] हर बुरी बात का (हर पाप पूर्ण बात का) ज़िम्मेदार शैतान ही है। इस कारण इसका कोई भी अर्थ एक ही मूल विचार को दिखाता है।

यह प्रार्थना हमें परीक्षा से दूर रहने में,[21] उस परीक्षा में सहायता के लिए, जो हमारे रास्ते में आती है, और शैतान को पराजित करने में सहायता के लिए परमेश्वर की सहायता मांगना सिखाती है। यह हम पर भी ज़िम्मेदारी डालती है। बहुत बार हम अपनी खुली आंखों से परीक्षा से भरी परिस्थिति में से जाने के बाद चाहते हैं कि परमेश्वर हमें परेशानी में से निकाले। हम यह प्रार्थना नहीं कर सकते कि ''हमें परीक्षा में न डाल,'' और फिर जान-बूझकर वहां जाएं, जहां हम जानते हैं कि हम परीक्षा में पड़ेंगे।

## महिमा देने में नमूना (6:13ख)

NASB और हिन्दी बाइबल में नमूने की प्रार्थना के अन्तिम शब्दों को कोष्ठक में रखा गया है: ''क्योंकि राज्य, और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन'' (आयत 13ख)। यह समापन आरम्भिक हस्तलिपियों में नहीं मिलता है। परन्तु इस बात का प्रमाण है कि आरम्भिक सदियों की कलीसिया में इन शब्दों का इस्तेमाल होता था और यही कारण है कि अधिकतर अनुवादों में यह शब्द कहीं न कहीं मिल जाते हैं, कहीं और नहीं तो टिप्पणियों या मार्ज़न नोट्स में तो मिल ही जाते हैं। प्रार्थना का समापन करने का यह शब्द उपयुक्त ढंग है। वे उस सारी भलाई के देने वाले यानी परमेश्वर की ओर मुड़ जाते हैं:

- ''राज्य'' उसी का है। राज्य उसका ही है। वह सब के ऊपर है और हमें इसे मानना ही पड़ेगा।
- ''पराक्रम'' उसी का है। मनुष्यों के पास जो भी शक्ति है वह परमेश्वर की शक्ति के सामने कुछ भी नहीं है और हमें इसे मानना पड़ेगा।
- ''महिमा'' उसी की है और हमें इसका प्रचार करना चाहिए।
- यह सब ''सदा'' तक रहेगा। ''आमीन।''

## सारांश

यह है नमूने की प्रार्थना। क्या यह हमें प्रार्थना की हर उस बात को बताती है, जो हमें पता होनी आवश्यक है? नहीं उदाहरण के लिए, यह प्रार्थना यीशु के नाम में नहीं है। नमूने की प्रार्थना तब कही गई थी, जब मूसा की व्यवस्था अभी प्रभावी थी और आज कोई भी विवेकी यहूदी इसे कर सकता है। पौलुस ने समझाया कि नई वाचा में हमें ''सब बातों के लिए *हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में*[22] परमेश्वर पिता का धन्यवाद'' (इफिसियों 5:20; यूहन्ना 16:24 और कुलुस्सियों 3:17 भी देखें)। इसके अलावा नमूने की प्रार्थना में की गई विनतियां सामान्य हैं। सामान्य प्रार्थनाओं का समय और स्थान होता है, पर आमतौर पर हमारी प्रार्थनाएं विशेष होनी आवश्यक हैं। हमें विशेष आशिषों के लिए धन्यवाद देना आवश्यक है। हमें विशेष पापों का अंगीकार करना आवश्यक है। हमें विशेष लोगों के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है। (देखें कुलुस्सियों 1:3; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2, 3; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; याकूब 5:16.) तौभी नमूने की इस प्रार्थना से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। जैसा पहले कहा गया है कि यह प्रार्थना दिशा देने, भक्ति, ज़ोर देने, चिन्ता, संयम, दीनता, समझ और महिमा में नमूना है।

अन्त में मैं आपको याद दिलाता हूं कि इस प्रार्थना का आरम्भ ''*हे हमारे पिता,* तू जो स्वर्ग में है'' (आयत 9क) से होता है। जब तक परमेश्वर आपका पिता नहीं है तब तक आप कानूनी तौर पर यह प्रार्थना नहीं कर सकते। *क्या* वह आपका पिता है? *क्या* आप उसकी सन्तान है? *क्या* आपने विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा परमेश्वर के परिवार में जन्म लिया है? पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि तुम सब उस *विश्वास करने के द्वारा* जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने *मसीह में बपतिस्मा लिया है* उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26, 27)। यदि आपने पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में बपतिस्मा ले लिया है, या आप परमेश्वर की सन्तान के रूप में *व्यवहार* करते हैं या आप उसके परिवार अर्थात कलीसिया

के लिए बदनामी का कारण बने हैं (1 तीमुथियुस 3:15)? यदि आपको बपतिस्मा लेने या घर वापसी की आवश्यकता है (देखें गलातियों 6:1; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)। तो मेरी प्रार्थना है कि आप अभी इसे कर लें।

---

टिप्पणियां

[1]''अत:'' शब्द प्रार्थना को पिछली शिक्षा से जोड़ता है। हमें व्यर्थ बक-बक का इस्तेमाल *नहीं* करना है (मत्ती 6:7)। इसके बजाय हमें *इस* रीति से प्रार्थना करनी है। [2]यह NASB के 68 शब्दों की बात है। यह मान लेता है कि आयत 13 का अन्तिम भाग इसमें शामिल है। (इस पाठ में आगे इस पर नोट्स देखें।) KJV में, मत्ती के संस्करण में 66 शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 13 के अन्तिम भाग को निकालने पर, मत्ती के वृतांत में 58 शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। [3]यह NASB में है। KJV में लूका के संस्करण में 58 शब्द हैं। यूनानी धर्मशास्त्र में लूका के वृत्तांत में 38 शब्द हैं। [4]कहते हैं कि *वास्तविक* ''प्रभु की प्रार्थना'' यूहन्ना 17 अध्याय में है। [5]*अनालिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, लिमिटेड, 1971), 3. [6]डी. मार्टिन लायर्ड-जोन्स, *स्टडीज़ इन द सरमन ऑन द माउंट,* अंक 2 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 60. लायड-जोन्स निर्गमन 3:5 में मूसा के अपने जूते उतारने की ओर इशारा कर रहा था। [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 344. [8]दानिय्येल ने भविष्यवाणी की कि राज्य की स्थापना चौथे शासन के दौरान होगी, जो कि इतिहास से पता चलता है कि रोमी साम्राज्य था। [9]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *दि न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 2006), 64-65. [10]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1, संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 198-99.

[11]यूनानी शब्द (*epiousios*) के अनुवाद ''प्रतिदिन'' पर टीकाकारों को बहुत कुछ कहना है। सबसे अधिक सम्भावित अर्थ मत्ती 6:1। में ''आज की'' वाक्यांश से जुड़ा है। एक और सम्भावित अर्थ ''कल'' है। किसी भी रूप में हमें वही मांगने के लिए कहा गया है, जिसकी हमें बिल्कुल निकट भविष्य में आवश्यकता है। [12]जहां आप रहते हैं, उसके अनुसार इसे बदल लें। [13]डी. ए. कार्सन, ''मैथ्यू,'' *दि एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री सीरीज़,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजैंसी रैफ़रेंस लाइब्रेरी, ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984), 171. [14]माल्टबी. डेवनपोर्ट बेब्कॉक, ''गिव अस दिस दे अवर डेयली ब्रेड,'' *बार्टलेट'स फैमिलियर कोटेशंस,* 12वां संस्क. (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एण्ड कंपनी, 1948), 731. [15]*दि अनालिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 296. इस प्रार्थना के एक प्रसिद्ध संस्करण में ''अपराधों'' शब्द है (ऐसा शब्द जिसका अर्थ ''पाप'' हो सकता है): ''हमारे अपराध हमें क्षमा कर जैसे हम अपने विरुद्ध अपराध करने वालों को क्षमा करते हैं।'' (जॉन वालेस सूटेर, *दि बुक ऑफ़ कॉमन प्रेयर एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ़ सेक्रामेंट्स एण्ड अदर राइटस एण्ड सेरेमनीस ऑफ़ दि चर्च* [न्यू यॉर्क: द चर्च पेंशन फंड, 1945], 67.) [16]लूका ने ''पापों'' और ''कर्ज़ों'' शब्द का इस्तेमाल अदल-बदलकर किया। [17]इस हवाले को मत्ती 18:23-35 से मिलाएं। [18]''इंग्लिश लिटरेचर: सी. एस. लुईस'' (http://www.anglik.net/lewis.htm; इंटरनेट; 13 जून 2008 को देखा गया)। [19]लैरी कैल्विन, *दि पावर जोन* (फोर्ट वर्थ: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 95. [20]NKJV में ''उस दुष्ट'' है।

[21]परमेश्वर किसी की परीक्षा नहीं करता (याकूब 1:13) इस कारण ''हमें परीक्षा में न डाल'' वाक्यांश का अर्थ ''हमें परीक्षा में पड़ने से बचने में सहायता कर'' जैसा कुछ होना चाहिए। [22]''यीशु के नाम में'' वाक्यांश में केवल शब्द ही नहीं है जो हम कहते हैं; यह तो हमारा इस बात को समझना है कि यीशु अब हमारा मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।